ॐ जय चित्रगुप्त हरे , स्वामी जय चित्रगुप्त हरे।

भक्त जनों के इच्छित फल को पूर्ण करे।। ॐ जय ....।

विघ्न विनाशक मंगलकर्ता , संतन सुखदाई।

भक्तन के प्रतिपालक , त्रिभुवन यश छाई।। ॐ जय ....।

रूप चतुर्भुज , श्यामल मुरति , पीताम्बर साजे।

मातु इरावती दक्षिणा , बम अंग साजे।। ॐ जय ....।

कष्ट निवारण , दुष्ट संहारण , प्रभु अन्तर्यामी।
सृष्टि सम्हारण , जन दुःख हारण , प्रकट हुए स्वामी।। ॐ जय ....।।

कलम दवात तलवार पत्रिका कर में अति सोहे।
वैजन्ती वन माला , त्रिभुवन मन मोहे।। ॐ जय ....।।

सिंहासन का कार्य सम्हाला , ब्रह्मा हरषाए।
तैतीस कोटि देवता , चरनन में धाये। ॐ जय ....।।

नृपति सौदास , भीष्म पितामह याद तुम्हे कीना।
वेगि विलम्ब न लायो , इच्छित फल दीन्हा।। ॐ जय ....।।

दारा , सूत , भगिनी सब स्वारथ के कर्ता।
जाऊं कहाँ शरण में , तू तज मैं भर्ता।। ॐ जय ....।।

बन्धु पिता तुम स्वामी, शरण गहुँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा , आस करूँ जिसकी।। ॐ जय ....।।

जो जन चित्रगुप्त जी की आरती निष् दिन नित गाये।
चौरासी के छूटे बन्धन , इच्छित फल पाये।। ॐ जय ....।।

न्यायाधीश बैकुंठ निवासी , पाप - पुण्य लिखते।
हम हैं शरण तुम्हारी , आस दूजी करते।। ॐ जय ....।।

-- x --